Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

30

हिंदी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव

डॉ. रमेश टी. बावनथडे
भवभूति महाविद्यालय, देवरी रोड, आमगांव, जिला – गोंदिया (महाराष्ट्र)

सारांश – हिंदी साहित्य में महात्मा गांधी की विचारधारा का प्रभाव अत्यंत व्यापक और गहन रहा है। सत्य, अहिंसा, आत्मबल, स्वदेशी, सादगी, ग्रामस्वराज और नैतिकता जैसे गांधीवादी मूल्यों ने हिंदी साहित्य की विषयवस्तु, शैली और चिंतन को नया आयाम प्रदान किया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में और उसके पश्चात, अनेक रचनाकारों ने गांधीजी की प्रेरणा से सामाजिक परिवर्तन और जागरण की दिशा में साहित्यिक योगदान दिया। रामधारी सिंह 'दिनकर', माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंशराय बच्चन जैसे कवियों के काव्य में गांधीवादी आदर्शों की स्पष्ट झलक मिलती है। गांधीजी की विचारधारा ने केवल साहित्य की संवेदना को ही नहीं, बल्कि लेखक की सामाजिक जिम्मेदारी की चेतना को भी तीव्र किया। यह शोध आलेख हिंदी साहित्य में गांधीवादी दर्शन की अभिव्यक्ति और उसकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। गांधीजी के विचारों ने साहित्य को केवल आत्माभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण का औजार बनाया। उनके प्रभाव से साहित्यकारों ने असहयोग आंदोलन, स्वदेशी अभियान, और अस्पृश्यता उन्मूलन जैसे आंदोलनों में साहित्यिक भाषा और शैली के माध्यम से भाग लिया। हिंदी गद्य और पद्य दोनों ने राष्ट्रनिर्माण के सांस्कृतिक संदर्भ में गांधी के आदर्शों को आत्मसात किया। यह आलेख साहित्य में गांधीवाद के प्रभाव को विश्लेषित करते हुए यह सिद्ध करता है कि गांधीवादी विचारधारा ने हिंदी साहित्य में नैतिकता, संवेदना और सामाजिक दायित्व का नया मानदंड प्रस्तुत किया। आज भी गांधीवाद साहित्य में नैतिक प्रतिरोध, समता और मानवतावाद की प्रेरक शक्ति बना हुआ है।

कूट शब्द- गांधीवाद , सत्य और अहिंसा ,हिंदी साहित्य,ग्रामस्वराज, स्वतंत्रता आंदोलन

प्रस्तावना

महात्मा गांधी केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक गहन नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विचारक थे। उनका जीवन सत्य, अहिंसा, आत्मशुद्धि, संयम और सादगी जैसे मूल्यों पर आधारित था, जिसने न केवल भारत की राजनीतिक धारा को नया मोड़ दिया, बल्कि समाज और साहित्य को भी गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक मुक्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे नैतिक और सामाजिक पुनर्जागरण से जोड़ा। यही कारण है कि उनके विचारों की अनुगूँज हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में सुनाई देती है।

गांधीजी का साहित्य के प्रति दृष्टिकोण भी अत्यंत स्पष्ट और सशक्त था। उन्होंने साहित्य को समाज के नैतिक उत्थान का माध्यम माना और रचनाकारों से अपेक्षा की कि वे जनजागरण, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना को अपनी रचनाओं में स्थान दें। हिंदी साहित्यकारों ने उनके इन आदर्शों को केवल विचार के रूप में नहीं, बल्कि साहित्यिक साधना के रूप में आत्मसात किया। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', प्रेमचंद जैसे रचनाकारों ने गांधीवादी मूल्यों को अपनी रचनात्मक दृष्टि में स्थान दिया।

यह शोध आलेख हिंदी साहित्य के इसी गांधीवादी पक्ष का पुनरावलोकन है। इसमें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि गांधीजी की विचारधारा ने साहित्य को किस प्रकार केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति से आगे ले जाकर सामाजिक चेतना, नैतिक विमर्श और राष्ट्रीय अस्मिता के दस्तावेज के रूप में विकसित किया। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि गांधीवादी विचारधारा आज भी साहित्य में नैतिक प्रेरणा और सामाजिक उत्तरदायित्व की प्रतीक बनी हुई है।

विषय विवेचन

1. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी के उन कवियों में अग्रणी रहे हैं, जिनकी रचनाओं में गांधीवादी विचारधारा गहराई से व्याप्त है। विशेषतः उनकी प्रसिद्ध कविता **'पुष्प की अभिलाषा'** में एक साधारण पुष्प की आकांक्षा के माध्यम से देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना को बहुत ही सशक्त और भावप्रवण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

"चाह नहीं मैं सुर्बालाओं के गहनों में गूंथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ...
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर जाएं वीर अनेक।"(पृष्ठ 10)

इस कविता में गांधीजी के 'त्यागमय राष्ट्रसेवा' के विचार को प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यक्त किया गया है। चतुर्वेदी की रचनाओं में भारत माता की सेवा सर्वोच्च कर्तव्य के रूप में चित्रित होती है। उनका काव्य केवल भावनात्मक उभार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का जीवन्त

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

आह्वान है। उन्होंने गांधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन, स्वदेशी भावना और नैतिक संघर्ष को आत्मसात कर उसे कविता के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

चतुर्वेदी की भाषा में सरलता और भावों में गहनता, गांधीवाद की मूल आत्मा – सादगी, निष्ठा और सत्य की अनुभूति कराती है। उनके काव्य का यह पक्ष उन्हें महज एक कवि नहीं, बल्कि गांधी युग का सशक्त काव्य प्रतिनिधि बनाता है।

2. मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' और चरित्र निर्माण

मैथिलीशरण गुप्त की रचना *'भारत-भारती'* हिंदी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव की एक जीवंत मिसाल है। यह काव्य महाकाव्य भारतमाता की वंदना मात्र नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण और नागरिक चरित्र निर्माण का घोष है। गांधीजी की तरह ही गुप्त ने भी समाज में नैतिकता, आत्मशुद्धि और आत्मबल को प्रमुखता दी।

गुप्त का यह दृष्टिकोण विशेषकर उन अंशों में स्पष्ट होता है, जहाँ वे देश के युवाओं, स्त्रियों और सामान्य नागरिकों को अपने कर्तव्यों की याद दिलाते हैं। गांधीजी जिस 'स्वराज्य' की बात करते थे, वह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि 'स्व' पर शासन अर्थात आत्मानुशासन भी था — यही बात गुप्त की कविता में दिखाई देती है।

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर, यह समस्या है सभी।" (पृष्ठ 14)

इस पंक्ति में आत्मचिंतन की जो प्रवृत्ति है, वह गांधीजी की आत्मशुद्धि की प्रक्रिया से मेल खाती है। *'भारत-भारती'* के माध्यम से गुप्त ने जिस सामाजिक नैतिकता की स्थापना की, वह गांधीवाद के नैतिक मूल्यों जैसे सत्य, संयम, सेवा और स्वदेशी से गहराई से जुड़ी हुई है।

मैथिलीशरण गुप्त की भाषा में शुद्धता, भावों में देशभक्ति, और विचारों में आत्मिक बल का आह्वान है — यही तत्व गांधीवादी साहित्यिक चेतना की रीढ़ हैं। अतः 'भारत-भारती' को हिंदी साहित्य में चरित्र निर्माण और नैतिक जागरण का एक आदर्श ग्रंथ माना जा सकता है।

3. प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी समाज दृष्टि

प्रेमचंद का साहित्य गांधीवादी समाज-दृष्टि का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से न केवल सामाजिक विषमता, वर्ग-संघर्ष और जातिगत भेदभाव को उजागर किया, बल्कि गांधीजी के समाज-रूपांतरण के विचारों को साहित्यिक रूप प्रदान किया।

'गोदान' में होरी जैसा किसान गांधीजी के 'ग्रामस्वराज' और 'श्रम-सम्मान' की अवधारणा का मूर्त रूप है। उसका संघर्ष महज एक किसान का नहीं, बल्कि उस भारत का है जो आत्मनिर्भरता और न्याय की तलाश में जी रहा है। वहीं, **'कफन'** जैसी कहानी समाज की अमानवीय असंवेदनशीलता को दिखाते हुए यह सवाल उठाती है कि क्या गरीबी और शोषण को नियति मान लेना उचित है – यह गांधी के 'सत्याग्रह' और सामाजिक करुणा की अवधारणाओं से जुड़ता है।

'नमक का दरोगा' में गांधीजी के 'सत्य' और 'ईमानदारी' के सिद्धांतों की स्पष्ट झलक मिलती है। रचनाकार सत्यनिष्ठ पात्र के माध्यम से यह दर्शाते हैं कि नैतिकता ही सच्चा बल है, भले ही उसका तत्कालिक लाभ न हो।

प्रेमचंद के पात्र कोई आदर्शवादी स्वप्न नहीं जीते, वे यथार्थ के भीतर ही परिवर्तन की संभावना तलाशते हैं। यह वही विचारधारा है, जिसे गांधीजी ने आत्मशक्ति और नैतिक सुधार के रूप में प्रस्तुत किया। प्रेमचंद का साहित्य इसीलिए केवल समाज का दर्पण नहीं, बल्कि परिवर्तन की प्रेरणा भी बन जाता है।

4. हरिवंश राय बच्चन की कविताओं में आत्मशक्ति और नैतिकता

हरिवंश राय बच्चन की कविताओं में गांधीवादी विचारधारा सीधे रूप में कम, परंतु गहरे स्तर पर आत्मशक्ति, नैतिक आत्मावलोकन और साधना की भावना के रूप में विद्यमान है। विशेष रूप से *'मधुशाला'* जैसी प्रतीकात्मक कविता में जहाँ मधुशाला को जीवन की गहराइयों, संघर्षों और आत्मबोध का प्रतीक माना जाता है, वहाँ गांधीजी के आत्मनिरीक्षण, आत्मसंयम और सादगी के मूल्यों की छाया स्पष्ट देखी जा सकती है।'मधुशाला' की पंक्तियाँ –**"मुसलमान और हिन्दू हैं दो, एक, मगर उनका प्याला, एक, मगर उनका मदिरालय, एक, मगर उनकी हाला..." (पृष्ठ 23)** — यहाँ कवि सामाजिक समरसता और एकता की बात करता है, जो गांधीजी के सांप्रदायिक सद्भाव के विचार से मेल खाती है।

हरिवंश राय बच्चन का काव्य अंतर्मन की साधना है, जो आत्मबल को प्राथमिकता देता है। आत्मशक्ति के इस रूप में गांधीजी की विचारधारा की गूंज सुनी जा सकती है — जहाँ सत्य के पथ पर चलने के लिए आत्मबल ही मार्गदर्शक बनता है। इस प्रकार बच्चन के काव्य में गांधीवाद मुखर नहीं, परंतु सूक्ष्म रूप में अंत:सलिला बनकर बहता है।

5. जयशंकर प्रसाद व दिनकर की रचनाओं में गांधीवाद व राष्ट्रबोध

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

जयशंकर प्रसाद और रामधारी सिंह 'दिनकर' – दोनों कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, नैतिक संघर्ष और आत्मबल की जो अभिव्यक्ति दी है, वह गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित दृष्टिकोण को सामने लाती है।

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में राष्ट्रबोध का गहन चित्रण मिलता है। विशेष रूप से *'कामायनी'* जैसे काव्य में *श्रद्धा* और *मनु* के माध्यम से आत्मनिरीक्षण, आत्मशुद्धि और मानसिक जागरण के संकेत दिए गए हैं, जो गांधीजी की आत्मबल पर आधारित विचारधारा से साम्य रखते हैं।

वहीं **दिनकर** की *'कुरुक्षेत्र'* और *'रश्मिरथी'* जैसी रचनाएँ एक ऐसे युद्ध की वकालत करती हैं, जो अन्याय के विरुद्ध सत्य और धर्म की रक्षा के लिए लड़ा जाता है। *'कुरुक्षेत्र'* में अर्जुन का मानसिक द्वंद्व और कृष्ण का आत्मबल पर आधारित मार्गदर्शन, गांधीजी के नैतिक संघर्ष और कर्मशीलता की याद दिलाते हैं। इसी प्रकार *'रश्मिरथी'* में कर्ण की नियति और संघर्ष गांधीवादी मूल्यों जैसे आत्मगौरव, दानशीलता और सामाजिक न्याय से जुड़े हुए हैं।दिनकर की पंक्तियाँ –

"क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।" — यह विचार गांधीवादी 'अहिंसा पर आत्मबल की निर्भरता' को ही काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार प्रसाद और दिनकर दोनों की रचनाओं में राष्ट्र और समाज की चिंता गांधीवादी चेतना के साथ संयोजित होकर प्रकट होती है – जहाँ साहित्य केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक उद्देश्य का माध्यम बनता है।

समारोप: गांधीवादी विचारधारा ने हिंदी साहित्य को केवल सत्य और अहिंसा के उपदेश नहीं दिए, बल्कि उसे आत्मिक अनुशासन, नैतिक साहस और सामाजिक प्रतिबद्धता का एक ठोस आधार प्रदान किया। जिस समय भारत स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहा था, उस काल में हिंदी साहित्यकारों ने गांधीजी के विचारों को केवल वैचारिक रूप में नहीं, बल्कि अपने रचनात्मक साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। इससे साहित्य का उद्देश्य केवल कलात्मक सौंदर्य या मनोरंजन तक सीमित न रहकर सामाजिक बदलाव का माध्यम बन गया।

गांधीजी की विचारधारा ने हिंदी साहित्य को एक गहन मानवीय दृष्टि से समृद्ध किया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के आत्मबल, न्यायबोध और नैतिक चरित्र की प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण थी। माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में त्याग और देशभक्ति, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में चरित्र निर्माण की प्रेरणा, प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक विषमता के प्रति चेतना, और दिनकर की काव्यधारा में नैतिक युद्ध के स्वर—all गांधीजी के विचारों की छाया में विकसित हुए। इन रचनाकारों ने साहित्य को केवल लेखन का साधन नहीं, बल्कि सत्य के अन्वेषण और न्याय की स्थापना का उपकरण बना दिया। यह शोध स्पष्ट करता है कि हिंदी साहित्य में गांधीवाद केवल एक वैचारिक आंदोलन नहीं था, बल्कि उसने साहित्य की आत्मा को जागृत किया। आज भी जब हम समकालीन संकटों, सामाजिक विघटन या नैतिक भ्रम की ओर देखते हैं, तो गांधीवादी साहित्यिक दृष्टिकोण हमें संवाद, समाधान और सहिष्णुता की राह दिखाता है।

इस प्रकार निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य में गांधीवादी दर्शन एक ऐसी जीवंत परंपरा बन चुका है, जो अतीत की धरोहर होने के साथ-साथ वर्तमान की चेतना और भविष्य की आशा भी है। साहित्य की यह धारा आज भी भारतीय समाज के नैतिक पुनर्निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

संदर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, माखनलाल. (वि.नि.). *हिम किरीटिनी*।
   चतुर्वेदी, माखनलाल. (वि.नि.). *पुष्प की अभिलाषा*।
2. गुप्त, मैथिलीशरण. (1912). *भारत-भारती*। वाराणसी: इंडियन प्रेस।
3. प्रेमचंद. (1936). *गोदान*। इलाहाबाद: सरस्वती प्रेस।
   प्रेमचंद. (1936). *कफन*। *मानसरोवर* (खंड 8) में संकलित।
   प्रेमचंद. (1924). *नमक का दरोगा*। *प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ* में संकलित।
4. बच्चन, हरिवंश राय. (1935). *मधुशाला*। इलाहाबाद: हिंदुस्तानी अकादमी।
5. सिंह, नामवर. (1990). *आलोचना और विचार*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. प्रभाकर, विष्णु. (2000). *गांधी: एक जीवनी*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।